ज्वालामुखी योग - 10

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ संगठित रूप में, ऐसे विशेष पुरुषार्थ की लेन-देन और याद की यात्रा के प्रोग्राम होने चाहिएँ। विशेष पुरुषार्थ अथवा विशेष अनुभवों की आपस में लेन-देन हो। ऐसा संगठन पाण्डवों का होना चाहिए। ऐसे **विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहे तो फिर देखो विनाश ज्वाला को कैसे पंखा लगता है। योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी।**

➳ _ ➳ **वह है विनाश-ज्वाला, यह है योग ज्वाला। जो ज्वाला से ज्वाला प्रज्वलित होगी।** आप लोगों के योग का साधारण रूप है तो विनाश ज्वाला भी साधारण है। संगठन पॉवरफुल हो।

➳ _ ➳ जैसे जब कोई चीज बनती है तो उसमें पानी चाहिए, घी चाहिए और नमक भी चाहिए, नहीं तो वह चीज़ बन न सके। वैसे हर-एक में अपनी-अपनी विशेषता है लेकिन **यहाँ तो सर्व की विशेषताओं का संगठन चाहिए।** क्योंकि समय भी अब चैलेन्ज कर रहा है ना। अच्छा!
(09.12.1975)

➢➢ योग और आग में समानता

➳ _ ➳ उष्णता (Heat)

→ उसमें आलस्य / अलबेलापन / शीतलता नहीं होनी चाहिए

- बार बार अभ्यास करके ऊर्जा उत्पन्न कीजिये

➳ _ ➳ प्रकाश

→ जितना गहरा योग, उतना गहरा प्रकाश

→ ज्ञान युक्त योग होना चाहिए

- ज्ञान का आधार योग है... योग का आधार ज्ञान है...

➳ _ ➳ ऊपर की और उठती है

→ योगी भी इस दुनिया से ऊपर उठने लगता है

➳ _ ➳ भस्म करने की शक्ति

→ विकार / विकल्प / विकर्म

→ नेगेटिव / व्यर्थ

→ पास्ट

- पुरानी स्मृतियाँ

→ **आत्म ग्लानी / Guilt / अपराध भाव**

- **यह ब्राह्मण जीवन में किये गए विकर्मों के कारण होता है**

➳ _ ➳ परिवर्तन करने की शक्ति

→ रूप को ही बदल देती है

➳ _ ➳ ज्वलन शक्ति धारण किये हुए है

→ पहले स्वयं में धारण की है ... फिर वह दूसरो को धारण कराती है

➳ _ ➳ भट्टी परिपक्व बनाती है

➳ _ ➳ अग्नि कुछ भी अपने पास नहीं रखती

→ फैला देती है

➳ _ ➳ अग्नि में आहुति दी जाती है

→ हम भी देह, देह के समबंधो और देह के पदार्थो की आहुति देते हैं